International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 155-161

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 155-161
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-03-2017
Accepted: 14-05-2017

Dr. Harsh Bala
Assistant Professor
Janki Devi Memorial College
University of Delhi, Karol Bagh,
Delhi, India

Correspondence
Dr. Harsh Bala
Assistant Professor
Janki Devi Memorial College
University of Delhi, Karol Bagh,
Delhi, India.

प्रश्नशास्त्र में ग्रहों का स्वरूपः एक अध्ययन

Dr. Harsh Bala

प्रस्तावना

यद्यपि मानव के मन मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाली जिज्ञासा, इच्छा, उत्सुकता, अकांक्षा, शंका एवं चिन्ता को ज्ञात करके समाधान करना दु:साध्य है तथापि इस स्वाभाविक जिज्ञासा की पूर्ति करने के लिये प्रश्नशास्त्र की रचना की गई। प्रश्नशास्त्र इतना प्राचीन नहीं है जितना ज्योतिष शास्त्र है परन्तु कालांतर में विभिन्न परिवर्तन तथा संवर्धन के साथ यह विकसित रूप प्राप्त कर चुका है, दोनों ही मनुष्य के लिए इष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट के परिहार का समाधान प्रस्तुत करते हैं और यह समझ लेना आवश्यक है कि प्रश्न सामान्य फलित ज्योतिष से भिन्न नहीं है। वास्तव में, यह उसका उन्नत रूप है, जहाँ ज्योतिष के समस्त सिद्धान्त और विशिष्टता संपूर्णता में संगठित होती है। प्रश्न के विश्लेषण में सभी अवधारणाओं और प्रणालियों का उपयोग किया जाता है, इससे यह स्पष्ट है कि प्रश्नकुण्डली के विश्लेषण में जातकशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट आधारभूत सिद्धान्त हैं, जिनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है। प्रश्न के फलादेश के आधारभूत तत्व μ प्रश्न के फलादेश के आधारभूत तत्वों का विभाजन तीन प्रकार से किया जा सकता है μ (1) प्रधान तत्व (2) सहायक तत्व (3) गौण तत्व। प्रधान तत्व वह होते हैं जो बाह्य रूप के बोधक होते हैं। कोई भी ज्योतिष शास्त्र को जब पहली बार अपने अध्ययन का विषय बनाता है तो सबसे पहले सूर्यादि ग्रहों के रूप, स्वभाव, गति आदि को जानकर ही फलादेश सटीक कर सकता है जिनके स्वरूपादि का निरूपण इस प्रकार है μ प्रधान तत्व–जातक व प्रश्न में फलादेश के मुख्य आधारबिन्दु निम्न तत्व हैं –ग्रह, राशि, भाव

ग्रह''ग्रह्'' तथा अच् से व्युत्पन्न ग्रह का अर्थ है जो ग्रहण करें ।[1] आकाश में जो ज्योतिः पिण्ड सदैव परिभ्रमण करते हुए नक्षत्रों को पार कर जाते हैं, वह ग्रह कहलाते हैं ।[2] सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु व केतु ये नौ ग्रह हैं राहु, केतु, को छाया या पाप ग्रह कहा गया ह[3] और राहु से सातवें स्थान में केतु रहता है । सूर्यादि ग्रहों की विशेष संज्ञाओं को ज्ञात करके ही फलादेश किया जाता है। सौर मण्डल में स्थित नौ ग्रह मानव जीवन के बाह्य व आन्तरिक व्यक्तित्व को अपने गुण धर्म के अनुसार प्रभावित करते हैं । जिस ग्रह के प्रभाव–विशेष में जातक पैदा होता है, उसी प्राकृतिक स्वभाव व स्वरूप को वह प्राप्त कर लेता है। वास्तव में जीवन में मनुष्य के विचार, भाव, रूप, प्रवृत्ति, सत्य, असत्य आदि से सम्बन्धित विषयों का प्रतिनिधित्व ग्रह ही करते हैं, न केवल जातकशास्त्र में बल्कि प्रश्नशास्त्र में पृच्छक के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का फलादेश ग्रह के स्वरूपादि संज्ञाओं के आधार पर किया जाता है। ग्रहों का सामान्य परिचय इस प्रकार है [4]

1. ग्रहों की द्वादश राशियाँ और उनके स्वामी

ग्रहों की द्वादश राशियाँ व स्वामी इस प्रकार है –

सूर्य	सिंह	बुध	कन्या, मिथुन	शनि	मकर, कुंभ
चन्द्र	कर्क	गुरु	धनु, मीन		
मंगल	मेष, वृश्चिक	शुक्र	वृष, तुला		

2 ग्रहों का व्यक्तित्व तथा प्रभाव

पृच्छक व जातक की आन्तरिक स्थिति के आधार पर फलादेश किया जाता है। बाह्य व्यक्तित्व का बोध ग्रह ही करवाते हैं। ग्रहों का बाह्य व आन्तरिक व्यक्तित्व, प्राणी के आत्मिक, अनात्मिक व शारीरिक रूप का फल कथन इस प्रकार करता है।[5]

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
व्यक्तित्व	आन्तरिक	बाह्य	बाह्य	आन्तरिक	बाह्य	आन्तरिक	आन्तरिक

ग्रह	आत्मिक	अनात्मिक	शारीरिक
सूर्य	इच्छाशक्ति, सदाचार, विश्राम, शान्ति, प्रेम, उन्नति, विकास	राजा, मन्त्री, सेनापति, सरदार आविष्कारक, पुरातत्ववेत्ता	हृदय, नेत्र, दाँत, रक्तसंचालन
चन्द्र	आन्तरिक इच्छा, भावना, कल्पना, सतर्कता, लाभेच्छा	श्वेतवर्ण, जहाज, बन्दरगाह, मछली, जल, तरल पदार्थ, नर्स, भोजन	पेट, पाचनशक्ति, आँतें, स्तन, गर्भाशय, योनि, नारी
मंगल	बहादुरी, दृढ़ता, क्रोध, आत्मविश्वास, लड़ाकू स्वभाव	सैनिक, डॉक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, नाई, बढ़ई	सिर, नाक, गाल, घाव, आप्रेशन, दर्द
बुध	स्मरण शक्ति, सूक्ष्म कला, तर्कशक्ति	स्कूल, कॉलेज, विद्वान, वैज्ञानिक, सम्पादन, लेखन, प्रकाशन	मस्तिष्क, स्नायु, वाणी, हाथ
गुरु	उदारता, स्वभाव, सौंदर्य प्रेम, भक्ति, ज्योतिष ज्ञान	व्यापार, मन्दिर, पुजारी, मंत्री, न्यायालय, शिक्षा संस्था, दान आदि	पैर, जंघा, जिगर, पाचन क्रिया, रक्त, नसें
शुक्र	स्नेह, सौंदर्यज्ञान, आराम, आनन्द		गला, गुर्दा, वर्ण, केश, पाचन शक्ति
शनि	तात्विकज्ञान, मननशीलता, धैर्य, दृढ़ता, गम्भीरता	कृषक, हल वाहक, कुम्हार, पुलिस, मठाधीश, प्रतिष्ठान, चौराहा, कब्रिस्तान	हड्डियाँ, नीचे के दाँत, आँतें

3 ग्रहों की शुभाशुभ संज्ञा

ग्रहों की शुभाशुभ प्रवृत्ति इस प्रकार है μ शुभग्रह–गुरु, शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा

अशुभग्रह– सूर्य, मंगल, शनि, राहु व केतु है। ग्रहों के शुभता अशुभता का अनुमान गहों की द्वादश भावों में शुभाशभ स्थिति से बताया जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रहों के बलाबल, दृष्टि इत्यादि की सही गणना कर फलादेश किया जाना चाहिए। क्योंकि जरा सी असावधानी एक ज्योतिषी के लिए बहुत बड़ी भूल या निन्दा का विषय बन सकती है, शुभग्रह सुखदायक तथा अशुभग्रह दुखदायक होते हैं । [6]

4. ग्रहों के नैसर्गिक कारक भाव [7] तथा कारकत्व [8]

प्रश्नकुण्डली में ग्रहों के कारकत्व का निर्धारण करने के अनन्तर ही फलादेश करना चाहिए, ग्रहों के कारकत्व भाव इस प्रकार है ।

द्वादश भावों के कारक ग्रह

भाव	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
कारकत्व	सूर्य	गुरु	मंगल	चन्द्र	गुरु	मंगल	शुक्र	शनि	गुरु	बुध	गुरु	शनि, मंगल
	पता	धन	भाई	माता	सन्तान	मामा	पत्नी	दुख	भाग्य	कर्म	लाभ	हानि

उत्तरकालामृत [9] व भावमंजरी [10] के अनुसार ग्रह कारकत्व सूची इस प्रकार है μ

ग्रह कारकत्व चक्र

सूर्य	आत्मा, शक्ति, किला, गरमी, प्रभाव, शिवपूजा, हड्डी, पेट, उत्साह, आँख, ज्ञान, चौपाया, राजा, मन की पवित्रता, रक्त, ताँबा, लक्ष्मी, प्रताप आकाश, काँटेदार झाड़ियाँ, ज्ञानोदय, वन, पर्वतों में विहार, बुढ़ापा
चन्द्र	बुद्धि, ब्राह्मण, सुगन्ध, कफ, मिरगी रोग, मानसिक, शंका, वेदना, यश, प्रसन्नता, नवरत्न, पश्चिम दिशा, नरम कपड़ा, हीरा, शरद ऋतु, मुहूर्त, नमक, मन, सफेद चँवर, मछली आदि जलजन्तु, चाँदी, स्फटिक
मंगल	शूरता, भूमि, शस्त्र, चोर, युद्ध, पशु, छोटा कद, क्षतिग्रस्त अंग, कफ, सुगंध, साँप, रक्त दर्शन, दक्षिण दिशा, ग्रीष्म ऋतु, मूर्ख, तीखा कड़वा रस, भाला, तलवार
बुध	वाणी, विद्या, गणित ज्ञान, सेना, बड़ा मकान, हरा, शिल्प, ज्योतिष, देव मन्दिर, भूषण, बुरा स्वप्न, नपुंसक, मृदु वचन, हेमन्त ऋतु, मन संयम, आन्ध्र भाषा में दक्षता, उत्तर दिशा, विद्वान, भगवान विष्णु, दु:स्वप्न, ममेरा भाई
गुरु	ब्राह्मण, शिक्षक, गो, सेना, कीर्ति, ज्योतिष, वेदान्त, पिता का पिता, गुरुजन, ज्येष्ठ भ्राता, दादा, तप, दान, मधुरस, दु:ख, वेद, सात्विकता, घोड़े का मुख, सोने के आभूषण, तीर्थ स्थान
शुक्र	श्वेत छत्र, चँवर, कपड़ा, विवाह, स्त्री, शुभ, प्रेम की बातें, हाथी, घोड़ा, जलीय स्थान, वसन्त ऋतु, काले बाल, मालिक, गरुड़, विद्या, इन्द्रजाल, अणिमादि सिद्धियाँ
शनि	आलस्य, रुकावट,चमड़ा, कष्ट, रोग, दु:ख, मरण, आय, गधा, खच्चर, डरावनी सूरत, शिशिर ऋतु, क्रोध, परिश्रम, पापकर्म, यमराज का पुजारी, सीसा धातु, शक्ति का दुरुपयोग, लोह, रोग, गरीबी, जाति भ्रष्टता, कारागृह।
राहु	छत्र, चँवर, अधार्मिक मनुष्य, पर्वत, पीड़ा, दक्षिण, पश्चिम दिशा, पिता एवं नाना, वायु का तेज, दर्द, झूठ, अँधी दृष्टि, गुप्त वस्तुएँ, मृत्यु का समय, अकस्मात् घटना, नेत्र, कुक्षि, वैद्य, कुत्ता, घाव, रोग।
केतु	चण्डेश्वर, डॉक्टर, मुर्गा, क्षय रोग, गंगास्नान, महान तप, मौनव्रत, वेदान्त, आत्मज्ञान, मोक्ष, ऐश्वर्य, क्षय रोग, कीड़ा खाने वाला, संसार से विरक्त, शूद्रसभा, सींगों वाले पशु, आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान, स्नेह, महान तप।

केतु को मंगलवत् तथा राहु को शनिवत् मानकर फलादेश करना चाहिए ।

5 ग्रहों की चर-स्थिर संज्ञा

चर संज्ञक ग्रह कार्य की गति के सूचक, स्थिर संज्ञक स्थिरता के तथा द्विस्वभाव से मिश्रित फल की प्राप्ति होती है । [11] किसी भी प्रश्न के तात्कालिक परिवर्तन सम्बन्धी प्रश्न, यथा यात्रा, रोग कार्यसिद्धि इत्यादि प्रश्नों में ग्रहों की चर, स्थिरादि संज्ञा का विचार किया जाता है ।

चरादि संज्ञा	ग्रह
चर	चन्द्र, मंगल, शुक्र, राहु
स्थिर	सूर्य, गुरु, शनि
द्विस्वभाव	बुध

6 ग्रहों का लिंग

स्वाभाविक रूप से स्त्री कोमल तथा पुरुष कठोर स्वभाव होता है। उसी प्रकार ग्रह भी लिंग संज्ञानुसार, कोमलता व कठोरता के बोधक होते हैं। ग्रहों की पुरुषादि संज्ञा इस प्रकार है । [12] तटस्थ परिणाम में नपुंसक ग्रहों की भूमिका महत्वपूर्ण है, जब मिश्रित परिणाम प्राप्त हो, तब प्रभाव की अधिकता लिंग निर्धारण करती है ।

स्त्री -	चंद्रमा, शुक्र, राहु
पुरुष -	सूर्य, गुरु, मंगल
नपुंसक -	शनि, बुध, केतु
मानव -	शुक्र, गुरु

7 ग्रहों के पंच तत्व

पंचतत्वों से निर्मित सृष्टि में मानव शरीर में उत्पन्न होने वाले रोगों में इन तत्वों के असंतुलन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त लाभलाभ, सन्तान, मृत्यु, आयु इत्यादि प्रश्नों में विचार किया जाता है तथा जन्म समय में जो ग्रह आत्माकारक, राशीश, लग्नेश हो या बली हो तो उन ग्रहों के तत्वों की प्रधानता व्यक्ति के शरीर में रहती है। ग्रहों के तत्व इस प्रकार हैं ।[13]

ग्रह	गुरु	बुध	मंगल सूर्य	शनि	शुक्र चन्द्र
तत्व	आकाश	पृथ्वी	तेज	वायु	जल

8 ग्रहों के धातु मूल जीव

प्रश्नशास्त्र में संसार की वस्तुओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। जिससे पृच्छक के मूक प्रश्न व प्रश्न को विषय लग्नादि में स्थित ग्रहों के बल के आधार पर जाना जा सकता है । [14] मूक प्रश्न में बली ग्रहों से धातु मूल जीव का विचार किया जाता है । [15]

धातु	मूल	जीव
चन्द्र, मंगल, राहु, शनि	सूर्य, शुक्र	केतु, बुध, गुरु

9 ग्रहों के शारीरिक चिह्न [16]

प्रश्नकाल में किसी भी मनुष्य या सम्बन्धी के शरीरिक चिन्हों का विचार ग्रहों के चिह्नों से किया जाता है। किसी भी सम्बन्धी के चिह्नों का विचार यथा वधू, सन्तान आदि प्रश्नों में लग्नेश से पृच्छक, सप्तमेश से वर-वधू, पंचमेश से पुत्र का, तृतीयेश से भाई, नवमेश से पिता, चतुर्थेश से माता के शारीरिक चिन्हों को जानना चाहिए। इसके अतिरिक्त विचारणीय भावेश की शुभ पाप स्थिति के आधार पर फलादेश किया जाता है। इनके अतिरिक्त जातक या किसी व्यक्ति की पहचान जाँचने के लिए, इसका प्रयोग करना चाहिए। ये नष्ट वस्तु प्रश्न में चोर की पहचान के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
चोट का निशान	मस्सा, तिल	चोट का निशान	उभरी नसें	काच रोग	कुक्षि में तिल	बाँए पैर में चोट का निशान

10 ग्रहों के शारीरिक अंग

रोग इत्यादि प्रश्न में सूर्यादि ग्रहों के अंगों से पीड़ित अंग जाना जाता है [17] ग्रहों की स्थिति शुभ या प्रभाव में होने पर अंग विशेष के पीड़ित या ठीक होने को बताती है ।

11 ग्रहों की पदादि संज्ञा

अनेक प्रश्नों में जीव की योनि के बोध के लिये ग्रहों की द्विपद चतुष्पाद आदि संज्ञा ज्ञात की जाती है, [18] जिससे मूक प्रश्नादि में जीव की योनि क्या है? यह ज्ञात हो जाता है। मूक प्रश्न में यदि इन ग्रहों का सम्बन्ध लग्न से हो तो जीव विशेष सम्बन्धी प्रश्न जानना चाहिए। प्रश्नमार्ग में मृत्यु प्रश्न में मृत्यु किस जीव के कारण हुई? इसका विचार किया गया है । [19]

द्विपद	चतुष्पद	पक्षी	सरीसृप
शुक्र, गुरु	मंगल, सूर्य	बुध, शनि	चन्द्रमा, राहु

12 ग्रहों का आकार

प्रश्नशास्त्र में ग्रहों के आकार से किसी वस्तु, व्यक्ति के आकार को ज्ञात किया जाता है, यथा नष्ट प्रश्न में चोर के आकार, विवाह प्रश्न में वर-वधू के आकार इत्यादि का विचार किया जाता है । [20] ग्रहों का आकार इस प्रकार है ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
चौकोर	गोल	चौकोर	गोलाकार	गोलाकार	दुर्बल	लम्बा	दीर्घाकार

13 ग्रहों का स्वभाव

पृच्छक या विचारणीय पुरुष व स्त्री के स्वभाव को ज्ञात करने के लिए ग्रहों के नैसर्गिक स्वभाव द्वारा इस प्रकार विचार किया जाता है । [21]

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वभाव	चंचल	उग्र, क्रूर	मृदु	भावुक	स्वार्थी	आलसी	तीक्ष्ण

14 ग्रहों की योजन दूरी

यदि कभी नष्ट वस्तु या लापता यात्री के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा जाये कि यात्री कितनी दूरी पर है? तो ग्रहों की दूरी से उसकी योजनात्मक दूरी का अनुमान लगाया जा सकता है। एक योजन दूरी की माप (4 कोस, 8 मील या 13 किलोमीटर) तक मानी गई है। ग्रहों की योजन नाप इस प्रकार है [22]–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
योजन दूरी	21	7	8	10	16	8	-

15 ग्रहों के वर्ण तथा देवता

मूक प्रश्न, नष्ट प्रश्न में पृच्छक का वर्ण व चोर का वर्ण, चोरी की गई वस्तु का वर्ण इत्यादि का ज्ञान ग्रहों के वर्ण से किया जाता है। ग्रहों के वर्ण इस प्रकार है । [23]

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वर्ण	रक्त / ताँबे	श्वेत	रक्त	हरा	पीला	श्वेत/अनेक	काला
देवता	अग्नि	जल	कार्तिकेय	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा

16 ग्रहों की जाति, सत्वादि गुण व आयु

मूकप्रश्न में प्रश्न का विषय किससे सम्बन्धित है पुरुष, स्त्री, बालक, वृद्ध तथा पृच्छक इत्यादि इनकी अवस्था का ज्ञान ग्रहों की अवस्था से आसानी से ज्ञात किया जाता है। यदि सूर्यादि ग्रहों की स्थिति लग्न में बलवान हो या पुष्ट हो तो, उसी ग्रहानुसार वर्ण वाले व्यक्ति के बारे में प्रश्न होता है । [24] यथा पृच्छक की आयु, चोर की आयु, वर्ग आदि का विचार किया जाता है। जब व्यक्ति अपने बारे में प्रश्न न करके किसी अन्य के बारे में प्रश्न करता है [25] तो उसकी आयु का निर्णय इस प्रकार करना चाहिए, लग्नेश मंगल या बाल चन्द्रमा हो तो 5 वर्ष इत्यादि इस प्रकार निम्न चक्रानुसार आयु जानी जाती है। आयु के भेद इस प्रकार हैं । [26]

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र
गुण	सत्व	सत्व	तमोगुण	रजोगुण	सत्व	रजोगुण	तमोगुण
आयु	70 से छोटा	5 वर्ष से छोटा	5 से छोटा	8 वर्ष से छोटा	30 वर्ष से कम	70 से छोटा	70 से अधिक

17 ग्रहों की अवस्था

प्रश्नमार्गकार [27] ने अन्यमतानुसार [28] ग्रहों की क्रमशः पाँच तथा सात अवस्था स्वीकार की है। पृच्छक या विचारणीय व्यक्ति की शुभाशुभ अवस्था का बोध ग्रहों की अवस्था से किया जाता है । [29]

ग्रह अवस्था बोधक चक्र

ग्रह	ग्रह अवस्था	राशि में स्थिति	अवस्था बोधक स्थिति	प्रवृत्ति
चन्द्रमा	अतिबाल, स्तनपान	सम राशि में	सूर्यास्त के साथ उदित ग्रह	शिशु प्रवृत्ति
	बाल	मित्र राशि में	उपरोक्त के 7 दिन बाद	खेल में प्रवृत्ति
बुध	कुमार, ब्रह्मचर्य	स्वराशि में	तदन्तर कुमार	पढ़ने में रुचि
शुक्र	युवा	मूल त्रिकोण में	वक्री गति के आरम्भ में	स्त्री के प्रति रुचि
गुरु	भूपति, प्रौढ	उच्च राशि में	वक्री गति के चलते समय	प्रभुत्व
सूर्य	वृद्ध	शत्रु राशि में	अस्त होने से 7 दिन पूर्व	कार्य करने की अक्षमता
शनि	मृत, अतिवृद्ध	नीच राशि में	अस्त होने पर	निश्चेतना

पाराशरमुनि [30] ने सम विषम राशि के अंशों के आधार पर फलप्राप्ति की मात्रा का निर्धारण निम्न प्रकार से किया है । [31]

विषम राशि के अंश	सम राशि के अंश	अवस्था	फल मात्रा
0-6 अंश	30 अंश तक	बाल्यावस्था	1/4
12 अंश	24 अंक तक	कुमार	1/2
18 अंश	18 अंश तक	युवावस्था	1
24 अंश	12 अंश तक	वृद्धावस्था	3/4
30 अंश	0-6 अंश तक	मृतावस्था	0

इसके अतिरिक्त 30 अंश के तृतीयांश में विभाजित राशियों की विषमराशि में जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था तथा सम में विपरीत क्रम से अवस्थायें नामानुसार फलदायक होती है, इसके अतिरिक्त ग्रहों की उच्चादि स्थिति के आधार पर वराहमिहिर [32] वैद्यनाथ [33] व भारतीय कुण्डली विज्ञान [34] के अनुसार जातक व प्रश्न में ग्रहों की अवस्थायें तथा उनका फल इस प्रकार है ।

अवस्थायें	ग्रह स्थिति	फल
दीप्त	ग्रह की स्थिति अपनी उच्च राशि में	सिद्धि
प्रमुदित मुदित	मित्र राशि में मुदित अवस्था	आमोद व मनोवांछित फल
स्वस्थ	स्वराशि में स्वस्थ अवस्था	मनोवांछित फल
दीन	नीच राशि में स्थिति	हीनता
शान्त, सुप्त	शत्रु राशि में स्थिति / शुभ वर्ग में	
प्रपीड़ित, विपीडित	अन्य ग्रहों के युद्ध में पराजित ग्रह	शत्रु पीड़ा
मुषित, खल	अस्तगंत ग्रह	धन नाश
विकल, परिहीयमानवीर्य	नीच राशि में जाने वाला ग्रह	
भीत, प्रवृद्धवीर्य	उच्च राशि में जाने वाला ग्रह	गज, अश्व, स्वर्ण, भूमि लाभ
शक्त, अधिकवीर्य	शुभग्रहों के वर्ग में	शक्ति व सम्पत्ति

ग्रहों की दश अवस्थाओं का फल μ जातक व पृच्छक को ग्रहों की अवस्थाओं का शुभाशुभ निम्न फल प्राप्त होता है । [35]

ग्रह अवस्था	फल
दीप्त	समस्त सुखों की प्राप्ति, शत्रु वर्ग का नाश, लक्ष्मी प्राप्ति
स्वस्थ	स्वर्ण आभूषण प्राप्ति, धन-धान्य वृद्धि, कुटुम्ब वृद्धि
मुदित	प्रसन्नता, स्वर्ण-रत्न से पूर्ण, शत्रुनाश तथा समस्त सुखों का भोग
शान्त	अधिक शान्ति, सुख धन प्राप्ति, धर्मपरायण
शक्त	वस्त्र, माला, सुगन्धित द्रव्य, स्त्री आदि की प्राप्ति, संसार में विख्यात
पीड़ित	अनेक दुःख, राग, शत्रु पीड़ा, बन्धु वियोग की प्राप्ति
भीत	राजा के समान व्यक्ति भी शत्रुओं के भय से निर्बल व पीड़ित
विकल	शत्रु से पीड़ित, बल व धनहीन
खल	स्त्री पुत्रादि का पालन करने में असमर्थ, दुखी, शोकयुक्त मन से सदैव रहने वाला

18 ग्रहों का उच्च नीच

ग्रहों की उच्च नीच संज्ञा का अर्थ है, ग्रह का स्वराशि या मूल त्रिकोण में होना या न होना। जिस राशि में ग्रह उच्च का होता है, उसमें फल देने में बल मिलता है। जिससे पृच्छक या जातक को शुभत्व की प्राप्ति होती है [36] जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने घर में या रिश्तेदार के घर में अपने को बली महसूस करता है, उसी प्रकार ग्रहों का उच्च मूल त्रिकोण इत्यादि बल होता है। जिसका विभाजन अंशों के आधार पर इस प्रकार ह [37] μ

ग्रह	उच्च राशि	अंश	नीच राशि	मूल त्रिकोण	अंश	स्वक्षेत्र अंश
सूर्य	मेष	10	तुला	सिंह	20	21-30
चन्द्र	वृष	3	वृश्चिक	वृष	4-30	10-30
मंगल	मकर	28	कर्क	मेष	12	19-20
बुध	कन्या	15	मीन	कन्या	16-20	21-30
गुरु	कर्क	5	मकर	धनु	20	14-15
शुक्र	मीन	27	कन्या	तुला	20	11-30
शनि	तुला	20	मेष	कुम्भ	20	21-30

उपरोक्त चक्रानुसार उच्चराशि से मूल त्रिकोण का बल कम होता है किन्तु स्वराशि से अधिक होता है, और ग्रह के उच्च राशि से सातवीं राशि में उक्त अंशों में ही ग्रहों की परम नीच संज्ञा होती है। जैसे-जैसे ग्रह परमोच्च की ओर बढ़ता है वैसे-वैसे शुभता बढ़ती जाती है तथा जैसे-जैसे नीच की ओर बढ़ता है शत्रुता कम होती जाती है ।

19 ग्रहों के कालादि

कभी कभी पृच्छक यह जानना चाहता है, कि उसे अभीष्ट की प्राप्ति कितने समय में हो जायेगी, तब उसे ग्रहों के काल आदि के सहायता से स्पष्ट फल प्राप्ति की काल सीमा बताई जा सकती है। ग्रहों के काल आदि में, जो नवांश हो तदनुसार ही फल प्राप्ति की अवधि बताई जाती है। ग्रहों का काल विभाजन इस प्रकार है । [38] ग्रहों के कालादि का ज्ञान किसी भी प्रश्न के फल प्राप्ति के समय का निर्देश करने में सहायक होता है। लग्न में स्थित नवांशेश से भी फल प्राप्ति काल का विचार करना चाहिए ।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अयन	क्षण	वार	ऋतु	महीना	पक्ष	वर्ष

20 ग्रहों की ऋतुएँ

इसी प्रकार ग्रहों भी ऋतुओं से भी प्राप्ति का समय ज्ञात करने में सहायता मिलती है किसी कार्य की सिद्धि, नष्टवस्तु की प्राप्ति के काल का ज्ञान ऋतुओं से भी किया जा सकता है। ग्रहों की ऋतुएँ इस प्रकार हैं । [39]

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर

21 ग्रहों की गति

सिद्धान्त ग्रंथों में ग्रहों की गति के आठ भेद स्वीकार किए गए हैं । [40] मार्गी, वक्री, वक्र, अनुवक्री, कुटिल, मन्द, मन्दतर, सम, अतिशीघ्र, शीघ्र तथा अतिशीघ्र, शीघ्र, मन्द, मन्दतर और सम पाँच मार्गी गतियाँ हैं । वक्री, अनुवक्री तथा कुटिल गतियाँ विलोम गतियाँ कहलाती है । वैसे तो मार्गी आदि गतियों का विचार जातक शास्त्र में किया जाता है किन्तु प्रश्न काल में वक्री गति भी शुभाशुभ फल को प्रभावित करती है । वक्री ग्रह की विशेषता यह है कि वह यदि नीच में हो तो अपनी उच्च राशि जैसा फल देता है तथा उच्च होने पर नीच का फल देता है, लेकिन वक्री ग्रह के साथ किसी भी ग्रह का 1/2 बल बढ़ जाता है । [41]

22 ग्रहों के नक्षत्र

ग्रह के नक्षत्र का विचार भी प्रश्नकाल में अवश्य करना चाहिए क्योंकि ग्रह अपना शुभाशुभ फल अपने नक्षत्र के दिन व ऋतुओं में देते हैं । [42]

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	शुक्र	शनि	बुध	केतु	शुक्र
नक्षत्र	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुर्नवसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू.फा
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	आर्द्रा	पुर्नवसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी

23 ग्रहों की मित्रता

ग्रहों की नैसर्गिक तथा तत्कालिक मित्रता-शत्रुता का विचार भी शुभाशुभ फलादेश के लिए जातक तथा प्रश्नशास्त्र में किया जाता है। ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री इस प्रकार है μ

नैसर्गिक मैत्री चक्र [43]

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चंद्र, गुरु, मंगल	शुक्र, शनि	बुध
चन्द्र	सूर्य, बुध		मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शनि, शुक्र
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	सूर्य, बुध	शनि
शुक्र	शनि, बुध	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
शनि	शुक्र, बुध	सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुक्र

जातक ग्रन्थों में आचार्यों ने उपरोक्त मैत्री चक्र ही स्वीकृत किया है । इसी प्रकार ग्रहों की तात्कालिक मित्रता शत्रुता का विचार भी करना चाहिए, जातकशास्त्र के समान प्रश्नशास्त्र में भी तात्कालिक मित्रता का विचार किया जाता है ।

तात्कालिक मैत्री चक्र [43]

अभीष्ट काल अथवा प्रश्नकाल में जो ग्रह जिस राशि में हो उससे उपरोक्त वर्णित स्थानों में रहने वाले ग्रह शत्रु-मित्र होते हैं। नैसर्गिक व तात्कालिक मित्रता के आधार पर ही पंचधा मैत्री का विचार करना चाहिए। पंचधा मैत्री [45] इस प्रकार है ।

ज्योतिषशास्त्र में अनेक विषयों का विचार नैसर्गिक मैत्री तथा तात्कालिक मैत्री से विचार किया जाता है जबकि प्रश्न में तात्कालिक मैत्री की ही प्रधानता होती है ।

तात्कालिक मित्रता	12, 4, 2, 10, 11, 3
तात्कालिक शत्रुता	5, 7, 8, 1, 6, 9

पंचधा मैत्री चक्र

पंचधा	नैसर्गिक		तात्कालिक
1. अधिमित्र	मित्र	+	मित्र
2. अधिशत्रु	शत्रु	+	शत्रु
3. शत्रु	सम	+	शत्रु
4. मित्र	सम	+	मित्र
5. सम	मित्र	+	शत्रु

24 ग्रहों के रत्न

जब कोई ग्रह कुण्डली विशेष में पापयुक्त या निर्बल होता है, तब न्यूनाधिक रूप उसके बल को बढ़ाने के लिए ज्योतिषी शुभत्व प्राप्ति के लिए सूर्यादि ग्रहों से सम्बन्धित रत्न धारण करने का निर्देश करते हैं। ग्रहों के रत्न इस प्रकार है [46] μ

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
माणिक्य	मोती	मूँगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	वैदूर्य

गोचर में ग्रहों की स्थिति के आधार पर तत्काल शुभत्व प्राप्ति के लिए रत्न धारण करके अशुभत्व का परिहार किया जाता है ।

25 ग्रहों के वृक्ष

वराहमिहिर [47], प्रश्नमार्गानुसार [48] व वृहतपाराशर होरा शास्त्र [49] के अनुसार ग्रहों के वृक्ष इस प्रकार हैं µ

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वृक्ष	लकड़ी वाले वृक्ष	सुन्दर वृक्ष	कड़वे, कांटेदार	फलरहित	फलदार	फूलदार	काँटे वाले, जो सुन्दर न हो, सूखे
	गिरितरु	कदली	कण्टकी	वेणु	कमल	नारिकेल	ताल
राशि	5	4	1, 8	3, 6	9, 12	2, 7	10, 11

वृक्ष सम्बन्धी प्रश्नों में या किसी विशेष प्रश्न में वृक्षों का विचार ग्रहों के द्वारा करना चाहिए और राहु, केतु जिस ग्रह के साथ बैठते है, उसी ग्रह के वृक्षों के अधिपति होते है । जातक शास्त्रानुसार वियोनि विचार में सभी उपयोगी, निरपयोगी, फल, फूल, लकड़ी वाले वृक्षों का विचार किया जाता है ।

26 ग्रहों के वस्त्र

प्रश्नकाल में पृच्छक, चोर या अज्ञात व्यक्ति के वस्त्रों का विचार ग्रहों के वस्त्रों से इस प्रकार किया जाता है। इसके दो मत हैं । [50]

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम मत	स्थूल	नवीन	जला हुआ	भीगा हुआ	मध्यम	मजबूत	फटा-पुराना
द्वितीय मत	रेशमी व लाल वस्त्र	सफेद उज्ज्वल	साधारण लाल वस्त्र	काला या नीला रेशम	पीला	रेशमी	मोटा रेशम

27 ग्रहों की रश्मियाँ

सूर्यादि ग्रहों की रश्मियों का विचार प्रश्न व जातक शास्त्र में किया जाता है। प्रश्नमार्ग में भी सन्तान प्रश्न में रश्मि साधन कर सन्तान संख्या का प्रतिपादन किया है । [51] और ग्रहों की रश्मि संख्या इस प्रकार है। यह भी ज्ञात होता है कि प्रश्न विशेष में रश्मि [52] संख्या भिन्न-भिन्न हो सकती है ।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रश्मियाँ	16	4	10	9	7	5	21

28 ग्रहों के गुणक

सूर्यादि ग्रहों के गुणक के आधार पर प्रश्न फल ज्ञात करने के साधन का उल्लेख बादरायण मुनि ने प्रश्नविद्या [53] में किया है। ग्रहों के गुणक इस प्रकार है µ

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गुणक	5	21	14	9	8	3	11

इन गुणकों के गुणनफल में 7 का भाग देने पर 1 आदि शेष शुभ ग्रहों शुक्र, चन्द्र, बुध, बृहस्पति की संख्या होने पर अभीष्ट फल सिद्धिदायक तथा शेष फल क्रूर ग्रह हो तो अभीष्ट माना जाता है । आयु, नष्ट जातक व लाभालाभ आदि प्रश्नों में ग्रह गुणक से फल कथन किया जाता है। ऐसा भी ज्ञात होता है कि भिन्न प्रश्नों में गुणक भिन्न हो सकते है ।

29 ग्रहों का इष्टानिष्ट स्थान में फल

सूर्यादि ग्रहों का इष्टानिष्ट स्थानों में निम्न फल होता है । [54]

ग्रह	इष्ट स्थान में फल	अनिष्ट स्थान में फल
सूर्य	सात्विकता पितृगण, राजा प्रेम, दान प्राप्ति, भ्रमण, सोना औषधि, व्यापार	राजा, शंकर, हृदय, जंघा के रोग, पित्त विकार, पशुभय, अग्निभय, आत्मपीड़ा
चन्द्रमा	रानी, दुर्गा, माता की कृपा, तिल, गुड़ घी वस्त्र, विप्र, गो, नौका	रानी कोप, माता कोप, कफ व वायु विकार, आत्मीय जन शत्रुता, खेती धन
मंगल	भूमि, सोना, शस्त्र प्राप्ति, शत्रु संहार, भाई व राजा से धन लाभ	भाई विरोध, भूमि, स्वर्ण नाश, चोर, शत्रु भय, रक्त विकार, ज्वर, नेत्र रोग, पात्र टूटना
बुध	घोड़ा, सोना, खेत, मित्र, भूमि, देवता, गुरु से अर्थ लाभ, शिल्प से धन लाभ, बौद्धिक प्रवृत्तियाँ, धार्मिक क्रिया लिपि, गणित से धन प्राप्ति	विष्णु, युवक, राजा कोप, चोर, पीड़ा, वाणी दोष
गुरु	बुद्धि व गुण वृद्धि, यज्ञ, वेदपाठ, जप से अर्थ लाभ, राजा से पद लाभ, बान्धव, स्वर्ण, हाथी, घोड़ा की प्राप्ति	कान में रोग, पुत्र रोग, ब्राह्मण देवता कोप, धार्मिक व्यक्ति से विरोध
शुक्र	रुपये, वस्त्र, मणि, स्त्री, विवाह, अर्थ लाभ, संगीत रुचि, भैंस, गाय, मित्र मिठाई की प्राप्ति	परिवार, स्त्री को रोग, लक्ष्मी हानि, प्रेमी जनों से कष्ट शेक, राजा मंत्री से विरोध
शनि	दुःख नाश, परिणीता स्त्री का भोग, दास, लोहे से लाभ, जाति व ग्राम प्रमुख का स्वामी होना	वायु कफ विकार, मूर्ख, चोर का कोप, स्त्री व नौकरों की ईर्ष्या
राहु व केतु	शनि की भांति केतु मंगल की भांति	

प्रश्न व जातक शास्त्र में फलादेश में प्रयुक्त होने वाले मूल तत्व ग्रह, राशि, भाव का शुभाशुभ योग ही अन्तिम निर्णय देने में सहायक होता है, प्रस्तुत शोध पत्र में इनकी सभी संज्ञाओं व शुभाशुभ स्वरूप को भिन्न-भिन्न ग्रंथानुसार एक साथ एकत्रित कर प्रस्तुत किया है । क्योंकि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सभी विषयों का सुनियोजित ढंग से व क्रमबद्ध रूप प्रस्तुत किया गया है । इस शोध प्रबन्ध में अत्यधिक बड़े स्तर पर विस्तृत विषयों को तालिकाओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है । जो अध्येत्ता के अध्ययन को सरल बनाने में उपयोगी होने के साथ रुचिवर्धन में भी सहायक होगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आप्टे, वामन शिवराम- संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 358
2. गच्छन्तो भानि गृहणन्ति सततं ये तु ते ग्रहाः ।

भचक्रस्य नगाश्व्यंशा अश्विन्यादि समाह्वयाः ।। बृ.पा.हो.शा., 3/4
3. अथ खेटा रविश्चन्द्रो मंगलश्च बुधस्तथा। गुरुः शुक्रः शनी राहुः केतुश्चैते यथाक्रमम्। ।।
तत्रार्क शनि भूपुत्राः क्षीणेन्दु-राहु-केतवः। क्रूराः, शेषग्रहा सौम्याः, क्रूरः क्रूर-युतो बुधः ।। वही, 3/11, 12
4. चतुर्वेदी, शुकदेव- मूक प्रश्न विचार, 4/18
5. शास्त्री, नेमिचन्द्र- भारतीय ज्योतिष, पृ. 29-32
6. भौममन्दार्क भोगीन्द्राः प्रकृत्या दुःखदा नृणाम् ।
शत्रुरुश्वेत किरण शुक्राः सुखकराः सदा।। भु.दी., 42/44
7. बृ.पा.हो.शा., 30/ 20-22
8. सूर्यो गुरुः कुजः सोमोः गुरुर्भौमो सितः शनि,
गुरुश्चन्द्रसुतो जीवो मन्दश्च भावकारकाः।। वही, 30/ 32
9. उ. का., 5/1-54
10. भा.म., 2/42-54
11. कपूर, दीपक- प्रश्नशास्त्र, पृ. 26
12. जीव मङ्गल मार्तण्डान्वदन्ति पुरुषान्बुधाः ।
त्रसोमसोमजमन्दाहिभृगु पुत्रांश्च योषितः ।। भु.दी., 40/42
13. मिश्र, सुरेशचन्द्र- ज्योतिष सर्वस्व, 4/47
14. प्र. मा., 15 / 24-26
15. बलिनौ भास्करभौमौ धातुकरौ संस्थितौ प्रश्ने ।
मूलकरौ शनिसौम्यौ शशिगुरुभृगुजास्तथा जीवाः ।। दैव.व., 10/11
16. प्र.मा., 16/ 18, 19
17. देखे, अध्याय-5
18. द्विपदौ भार्गवगुरु भोमार्कौ च चतुस्पदौ ।
पक्षिणौ बुधसौरी च चन्द्रराहु सरीसृपौ ।। भु. दी., 29/32
19. देखे, अध्याय-5, पृ.
20. स्थूल इन्दुः सितः षष्ठश्चतुरस्त्रौ कुजोष्णगू
वर्तुलौ सौम्यधिष्णौ दीर्घौ शनिभुजङ्कमौ ।। भु.दी., 31 / 35
21. चतुर्वेदी, शुकदेव- मूक प्रश्न विचार, पृ. 21, 22
22. वही, पृ. 23
23. ताम्रसितातारुणहरितकपोतविचित्रासिता इनादीनाम्।
पावकजलग्रहकेशवशक्रशचीवेधसः पतयः।। सा. 4/12.
24. प्र.मा., 14/2
25. दै.व., 10/7, 8
26. बालो धराजःशिशजः कुमारकस्त्रिंशदगुरुः षोडशवत्सरः सितः।
पञ्चाशदर्को विधुरब्दसप्ततिः शताब्दसङ्ख्याः शनिराहुकेतवः।।
जा.पारि., 2/14
27. प्र.मा., 8/ 7, 8, 12, 13
28. वही, 8/ 10, 11
29. वयांसि तेषां स्तन्पानबाल्यव्रतस्थिता यौवनमध्यवृद्धाः।
अतीव वृद्धा इति चन्द्रभौमज्ञशुक्रजीवार्कशनैश्चराणाम्। दैव.व., 9/5
30. क्रमाद्बालः कुमारोऽथयुवावृद्धस्तथामृतः।
षडंशैरसमे खेटः समे ज्ञेयो विपर्ययात् ।।
फल पादमितं बाले फलार्धं च कुमारके ।
यूनिपूर्णफलं ज्ञेयं वृद्धधे किंचित् मृते मृतम् ।।
बृ.पा.हो.शा., 42/3-6
31. ओझा, मीठालाल हिम्मतराम- भारतीय कुण्डली विज्ञान, पृ. 98
32. दैव.व., 1/3-8
33. दीप्तः प्रमुदितः स्वस्थः शान्तः शक्तः प्रपीड़ितः ।
दीनः खलस्तु विकलो भीतोऽवस्था दश क्रमात्।। जा.पारि., 2/ 16
34. ओझा, मीठालाल हिम्मतराम- भारतीय कुण्डली विज्ञान, पृ. 98
35. सा., 5/ 5-13
36. जा.पारि, 1/ 26-29
37. बृ.पा.हो.शा., 3/49-54
38. अयनक्षणवासरर्तवो मासोऽर्ध च सभा च भास्करात् ।
कटुकलवणतिक्तमिश्रिता मधुराम्लौ च कषाय इत्यादि ।।
बृ.जा., 2/14
39. वही, 2/ 45, 46
40. वक्राऽतिवक्रा कुटिला मन्दा मन्दतरा समा। तथा शीघ्रतरा शीघ्रा ग्रहाणामष्टधा गतिः ।। तत्रातिशीघ्रा शीघ्राख्या मन्दा मन्दत्तरा समा । ऋज्वीति पञ्चधा ज्ञेया या वक्रा सातिवक्रगा।। -सूर्य.सि. 2/12, 13
41. वक्री स्वोच्च्बलः सवक्रसहिते मध्यं बलं तुङ्गभे,
वक्री नीचबलः स्वनीचभवने वक्रीबलं तुङ्गजम् ।
उच्चस्थेन युतोऽर्द्धवीर्यमिति चेन्नीचे तु शून्यं बलं,
मित्रैः पापखगैः शुभै रिपखगैर्युक्तोऽपि चार्द्ध बलम् ।। उ.का, 2/6
42. प्र.मा., 14/88
43. मित्राणि सूर्यादगुरुभौमचन्द्राः सूयैन्दुपुत्रौ रविचन्द्रजीवाः ।
भानुः सशुक्रः शशिसूर्यभौमा मन्देन्दुजौ शुक्रबुधौ क्रमेण ।।
शुक्रार्कजौ चन्द्रमसो न कश्चित्सौम्यः शशी शुक्रबुधौ रवीन्द्रू
सोमार्कवक्रा रवितस्त्व मित्रा मत्रारिशेषो न सुहृन्न शत्रुः ।।
सा, 4/28, 29
44. सा, 4/ 30
45. ओझा, मीठालाल हिम्मतराम-भारतीय कुण्डली विज्ञान, पृ. 53
46. क. माणिक्यं दिननायकस्य, विमलं मुक्तफलं शीतगोः ।
माहेयस्य च विद्रुमं मरकतं सौम्थस्य गारुत्मकम् ।।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यम्य वज्रं शनेः।।
नीलं निर्मलमन्ययो श्च गदिते गोमेदवैदूर्यके ।। जा.पारि, 2/ 21
ख. प्र.मा., 22/47
47. बृ.जा., 3/7
48. प्र.मा., 8/24
49. बृ.पा.हो.शा., 3/40, 41
50. वस्त्राणं स्थूलाहतशिखिजलहतमध्यदृढसुजीर्णानाम् ।
ताम्रमणिहेममिश्रितरूप्यकमुक्तायसां वाऽपि।। सा., 4/16,
51. तिग्मांशेर्दश शीतगोर्नवगुरोः सतांशवोष्टौ भृगाः ।
पश्चारार्कि विदां स्वनीच रहितं षड्गादि कञ्चेद्गृर्हचक्रं
निर्गलितं स्वरश्मि गुणितं षर्दि्भजेद्रश्मयो ।
यभ्यन्तेऽत्रहि वक्र मौढय मुखतः कलयौ च वृद्धिक्षयो ।।
प्र.मा, 19/87,88
52. वही, 26/ 59
53. पञ्चैकविंश मनवो नवाष्टदहनाः शिवाख्या स्युः।
सूर्यादीनां क्रमशो गुणकाराः सर्वपृच्छासु ।। प्र.वि, 4/24
54. प्र.मा., 14/ 90-97